हर्ष का इतिहास में स्थान

भूमिका

यद्यपि हर्ष का महत्व इतिहास में इतना ऊँचा नहीं है, जितना कि समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त मौर्य आदि दूसरे शासकों का है, फिर भी हर्ष का राजनीति, धर्म, संस्कृति के क्षेत्र में काफी योगदान है। वह समुद्रगुप्त की भांति सारे राजाओं का दमन न कर सका लेकिन उसने उत्तरी भारत में अपने लिए एक ऐसा स्थान बनाया, कि उत्तरी भारत का कोई शासक उसको युद्ध की चुनौती देने का साहस नहीं रखता था। हर्ष प्राचीन भारतीय इतिहास का अन्तिम महान् शासक था यह कहना सर्वथा अनुचित होगा, क्योंकि हर्ष के पश्चात् भी उत्तरी भारत में ऐसे वंश और राजाओं ने शासन किया, जिनका राज्य न केवल हर्ष से अधिक शक्तिशाली अपितु अधिक समय तक चलता रहा। इसके लिए विशेषकर प्रतिहार वंश का उल्लेख किया जा सकता है। इस वंश ने लगभग दो सौ वर्ष से अधिक शासन किया। इस वंश के शासक न केवल उच्चकोटि के विजेता ही थे, अपितु सफल प्रशासक भी थे। इसलिए हर्ष को भारतीय इतिहास का अन्तिम महान् शासक नहीं माना जा सकता है।

हर्ष एक कूटनीतिज्ञ के रूप में

हर्ष एक महान् कूटनीतिज्ञ था। इसके तीन प्रमाण उपलब्ध हैं। प्रथम, उसने कामरूप–नरेश भास्करवर्मा के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया। इसके फलस्वरूप हर्ष तथा भास्करवर्मा का गौड़ नरेश शशांक के विरूद्ध एक संयुक्त मोर्चा बन गया जो हर्ष का शत्रु था। शशांक की शक्ति के मूलोच्छेदन में भास्करवर्मा से बड़ी मदद मिली। द्वितीय, हर्ष ने वल्लभी–नरेश ध्रुवसेन द्वितीय के साथ वैवाहिक तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया। इसके फलस्वरूप वह अपने प्रबल शत्रु चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय को अपने प्रभाव में रखे रहा। तृतीय, उसने चीन के सम्राट के साथ मधुर एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया। 641 ई० में उसने चीनी सम्राट की सेवा में एक ब्राह्मण दूत भेजा। 645 ई० में चीन से भी एक दूतमंडल भारत आया था।

हर्ष एक विजेता के रूप में

हर्ष की तुलना प्रायः गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त से की जाती है। हर्ष में समुद्रगुप्त के कुछ गुण विद्यमान थे तथा उसने समुद्रगुप्त की भांति उत्तरी तथा दक्षिणी भारत को एकता सूत्र में बांधने की चेष्टा की। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि जिस समय हर्ष ने राज्य संभाला तो वह शत्रुओं से घिरा हुआ था तथा उसने युद्ध करके अपने राज्य को सुरक्षित बनाया परन्तु उसे समुद्रगुप्त की भांति महान् विजेता नहीं माना जा सकता। समुद्रगुप्त ने उत्तरी भारत में लगभग नौ शासकों को तथा दक्षिणी भारत में

Scanned with CamScanner

लगभग बारह राजाओं को हराया। हर युद्ध में समुद्रगुप्त विजयी रहा। वास्तव में यह कहना अनुचित न होगा, कि समुद्रगुप्त एक उच्चकोटि का योद्धा तथा विजेता था। हर्ष के युद्धों में समुद्रगुप्तवादी सफलता तथा दृढ़ता का अभाव था। हर्ष ने बंगाल के राजा शंशाक को हराया तो अवश्य परन्तु उसकी शक्ति का पूर्ण दमन न कर सका तथा शशांक आजीवन उसके लिए चिन्ता का कारण बना रहा। इसके अतिरिक्त हर्ष ने दक्षिणी भारत के शासक पुल्केशिन द्वितीय के विरूद्ध सैनिक तैयारियां कीं, परन्तु पल्केशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से ज्ञात होता है कि हर्ष की बुरी हार हुई।

हर्ष एक प्रशांसक के रूप में

हर्ष ने शासन के उत्तरदायित्व का निर्वाह अच्छे ढंग से किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यद्यपि हर्ष अपनी प्रजा को सुखी बनाने के लिए प्रयत्शील रहता था, परन्तु हर्ष के काम करने के लिए बहुत कम समय था। हर्ष के काल में कर थोड़े थे तथा अपराध भी अधिक नहीं होते थे, परन्तु फिर भी जब हर्ष के काल की तुलना गुप्त काल से किया जाता हैं, तो हर्ष की महानता फीकी पड़ जाती है। हर्ष के काल में शासन तथा दण्ड कठोर होते हुए भी सड़कें सुरक्षित नहीं थीं और यात्रियों के साथ प्रायः दुर्घटनाएं होती रहती थीं।

हर्ष की धार्मिक सहनशीलता

हर्ष के धार्मिक कार्यों में प्रायः उसकी तुलना अशोक महान् से की जाती है। जिस प्रकार अशोक के काल में बौद्ध धर्म ने उन्नति की और अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया था। उसी प्रकार हर्ष ने गुप्त काल में जीर्ण–शीर्ण बौद्ध धर्म को फिर से जीवित कर दिया। उसकी बुद्ध धर्म की सेवाओं के कारण ही ह्वेनसांग ने उसे शिलादित्य कहा है। परन्तु हर्ष न तो अशोक के आदर्शों तक पहुँच सका और न ही उसने अपने कार्यों द्वारा उतनी धार्मिक सहनशीलता को प्रकट किया, जितना कि अशोक ने। लोग हर्ष की धार्मिक नीति से सन्तुष्ट नहीं थे। ऐसा भी कहा जा सकता है कि हर्ष की धार्मिक नीति भी कोई विशेष सफल नहीं हुई।

विद्या तथा कला प्रेमी

हर्ष एक उच्चकोटि का कवि तथा नाटक लेखक था। नागानन्द, रत्नावली तथा प्रियदर्शिका उसी द्वारा रचे गये हैं उसने बड़े–बड़े विद्वानों को भी संरक्षण दिया। बाण भट्ट उसी के दरबार का एक उच्च कोटि का विद्वान था। उसने केवल हर्षचरित्र की ही रचना नहीं कि, बल्कि कादम्बरी का भी लेखक वही था। प्रसिद्ध व्याकरण लेखक भतृहरि भी इसी काल में हुआ। कुछ इतिहासकारों का विचार है कि राज्य की कुल आय का 1/4 भाग शिक्षा तथा साहित्यिक व्यक्तियों पर खर्च होता था।

Scanned with CamScanner